Election Commission of India

NAME OF THE NEWSPAPER नवभारत टाइम्स DATE: - 8 OCT 2012

9

ज्यादा वोट, ज्यादा सीटें

दुनिया को आज ज्यादा महिला नेताओं की जरूरत है। और मैं यह साफ तौर पर कहना चाहती हूं कि महिलाएं ज्यादा कुछ नहीं मांग रहीं। हम तो सिर्फ बराबरी का एक मौका और अपना बराबर का हिस्सा मांग रहे हैं। महिलाएं वोट देने के लिए खुलकर सामने आ रही हैं। अध्ययन बताते हैं कि समूचे दक्षिण एशिया में वोट देने वाली महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों के समान या उससे अधिक- 52 के मुकाबले 54 प्रतिशत है। उनका मताधिकार छीनने की कोशिश करने वालों की जोर-जबर्दस्ती के बावजूद, पहले से अधिक महिलाएं वोट डाल रही हैं। किंतु, मतदाता के रूप में महिलाओं की उन्नति के अनुपात में संसद में उनकी उपस्थिति नहीं बढ़ी है। दुनिया की जनसंख्या में महिलाएं 51 प्रतिशत हैं, फिर भी जन प्रतिनिधि के रूप में उनकी भागीदारी कम है। इस समय दुनिया भर की संसदों में महिलाओं का औसत सिर्फ 20 प्रतिशत है। इसीलिए, मैं जबर्दस्त हिमायत करती हूं कि जब तक हम बराबरी के आधार पर न खड़े हो जाएं तब तक आरक्षण जैसे विशेष अस्थायी उपायों के लिए ठोस कार्रवाई की जाए। यहां भारत में आरक्षण की व्यवस्था ने महिला सशक्तीकरण और जमीनी स्तर पर लोकतंत्र की सफलता की एक महागाथा लिखी है। एक दशक पहले तक इस महान देश में ग्राम पंचायतों में महिलाओं का प्रतिशत पांच से भी कम था, लेकिन आज इनमें 40 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं। यह नाटकीय और त्वरित परिवर्तन आरक्षण की देन है। भारत की ग्राम पंचायतों में महिलाओं के लिए कम से कम एक-तिहाई सीटें आरक्षित करने के लिए 1993 में संविधान संशोधन किया गया था। आज पूरे भारत में 15 लाख महिलाएं इन पंचायतों के लिए चुनी गई हैं। राजस्थान से लेकर पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश तक महिलाएं अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं, बदलाव के साथ-साथ न्याय, समानता और लोकतंत्र मजबूत करने की मांग कर रही हैं। इस अनुभव से राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं को आरक्षण देने के बारे में केंद्र सरकार के वर्तमान प्रयासों को बल मिलता है और दुनिया इसका नतीजा आने का इंतजार कर रही है। राज्यसभा में पारित महिला आरक्षण विधेयक अगर कानून बन गया तो इससे 1947 के बाद भारत में एक सबसे महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है। भारत की महिलाओं में और बाकी दुनिया में भी इससे एक जबर्दस्त संदेश जाएगा। आज अल्जीरिया से लेकर लीबिया और सेनेगल तक पहले से अधिक महिलाएं अपनी राष्ट्रीय संसदों में प्रतिनिधि की भूमिका निभा रही हैं। संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 30 प्रतिशत तक ले जाने वाले देशों की संख्या 27 से बढ़ कर 30 हो गई है और इन 30 देशों ने आरक्षण जैसे विशेष अस्थायी उपायों के जरिए यह लक्ष्य हासिल किया। इसका एक सबसे ताजा उदाहरण सेनेगेल है, जहां पिछले चुनाव में महिला सांसदों का अनुपात लगभग दोगुना यानी 45 प्रतिशत हो गया है।